फुटबॉल की कहानी

रॉब लॉयड, चित्र: पैडी



फुटबॉल की कहानी

रॉब लॉयड, चित्र: पैडी



विषयवस्तु



अध्याय 1

प्राचीन गेंद का खेल



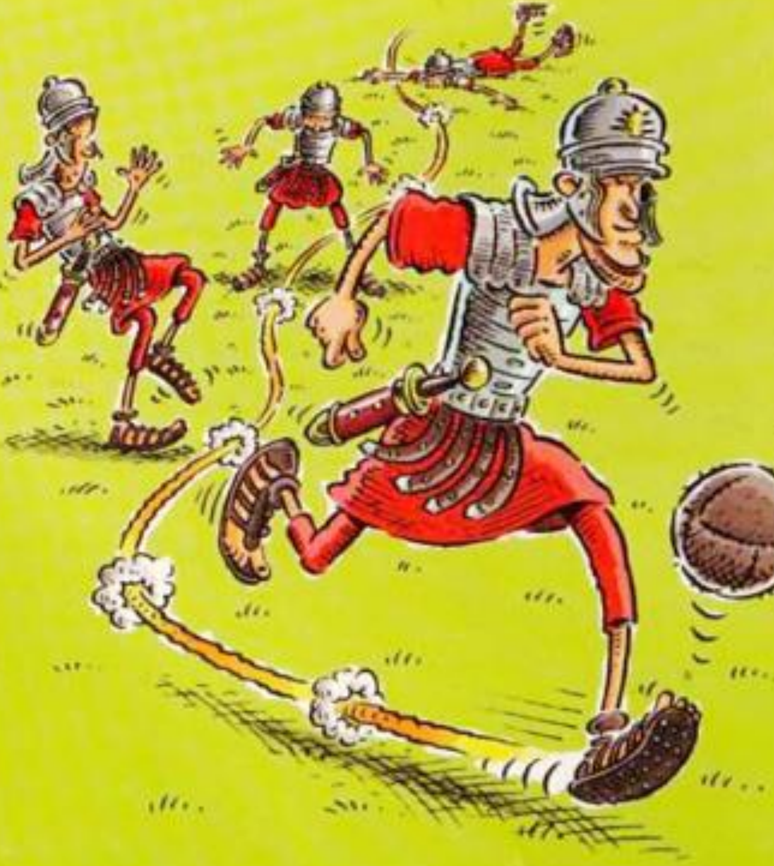
लोगों ने हमेशा गेंदों को लात मारना पसंद किया है. 2,000 साल पहले, प्राचीन चीन में लोगों ने गेंदें बनाईं जो बकरी के फर से भरी थीं.

हालांकि वे खिलाड़ी नहीं थे, वे सैनिक थे. वे गेंद को अपने ऊपर लटके हुए एक छोटे से जाल में पैर से मारकर डालते थे. सेना के जनरल सोचते थे कि इस अभ्यास से सैनिकों का हथियार चलाते समय, निशाने में सुधार होगा. युद्ध का पूरा अनुभव प्राप्त करने के लिए, वो गेंदों को एक कतार में रखते थे...



..और फिर बाकी सेना आक्रमण करती थी.

सौ साल बाद, रोमन सेना ने भी फुटबॉल के खेल द्वारा प्रशिक्षण लिया. उनके खेल में गेंद को साथ लेकर दौड़ना पड़ता था और उसे दूसरी टीम की लाइन के पार किक करके मारना होता था. वो मैच बहुत तेज होते थे...



...और वे उग्र भी होते थे. कभी-कभी दोनों ओर सैकड़ों खिलाड़ी होते थे.

जब रोमन सेना ने यूरोप पर विजय प्राप्त की, तब उन्होंने अपने बॉल गेम को नए देशों में पेश किया - और तब पहली बार अंतरराष्ट्रीय मैच खेले गए.



अध्याय 2

मध्यकालीन भीड़



फुटबॉल वास्तव में ब्रिटेन में बहुत लोकप्रिय हुआ. बहुत से लोग सोचते हैं कि रोमन लोग ही उस खेल को वहां लाए. लेकिन एक मत के अनुसार वो खेल पहली बार एक वाइकिंग राजकुमार के सिर के साथ खेला गया था.

वो खेल इंग्लैंड में जल्दी ही बहुत लोकप्रिय हुआ - वास्तव में लोग उसके दीवाने हो गए. जब दो गांवों के बीच मैच आयोजित किए जाते, तो हजारों लोग उसे खेलने के लिए आते थे.

खेल का उद्देश्य गेंद को एक गांव से दूसरे गांव में लात मारकर लेकर जाना था. लेकिन असल में वे मैच क्रूर लड़ाई का सिर्फ एक बहाना थे. जहां एक ओर खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए भारी भीड़ जमा होती थी वहीं घबराए हुए आम लोग अपने घरों से डर के मारे बाहर नहीं निकलते थे.



खिलाड़ी संकरी गलियों में, कीचड़ भरे मैदानों में और यहां तक कि दलदलों और नदियों में भी गेंद का पीछा करते थे. खेल पूरे दिन चल सकता था, और कभी-कभी अगले दिन भी.



पूरे मैच के दौरान, खिलाड़ी एक-दूसरे को मारते, एक-दूसरे को काटते और एक-दूसरे को लात मारते थे. यहां तक कि वे एक-दूसरे को डंडों से भी पीटते थे. केवल एक चीज की अनुमति नहीं थी - वो थी हत्या करना.



इस खेल से इतना अधिक नुकसान हुआ कि 1314 में लंदन के लॉर्ड मेयर ने उसे शहर की सड़कों पर प्रतिबंधित कर दिया.

फुटबॉल खेलना मना है!



लेकिन लॉर्ड मेयर की बात किसी ने नहीं मानी. क्योंकि तब तक फुटबॉल के खेल के बहुत सारे प्रशंसक और दीवाने बन हो चुके थे.



अध्याय 3

"हमें कुछ नियमों की ज़रुरत है."



19वीं शताब्दी में, लड़कों की छोटी टीमों ने, ब्रिटेन के तमाम स्कूलों में फुटबॉल खेलना शुरू किया. शिक्षकों को उम्मीद थी कि वो खेल उन्हें ताकत, साहस और एक टीम के रूप में काम करना सिखाएगा.

फ़ुटबॉल का खेल अब सड़कों से हटकर स्कूल के खेल के मैदानों में चला गया था, जिसे पिच कहा जाता था. टीमों को गोल दागने के लिए प्रत्येक पिच के दोनों छोर पर गोल पोस्ट होते थे. क्योंकि तब कोई भी नियम निर्धारित नहीं थे इसलिए प्रत्येक स्कूल अपने-अपने नियम बनाता था.



कुछ नियमों ने खिलाड़ियों को एक-दूसरे को टंगड़ी मारने की अनुमति दी.

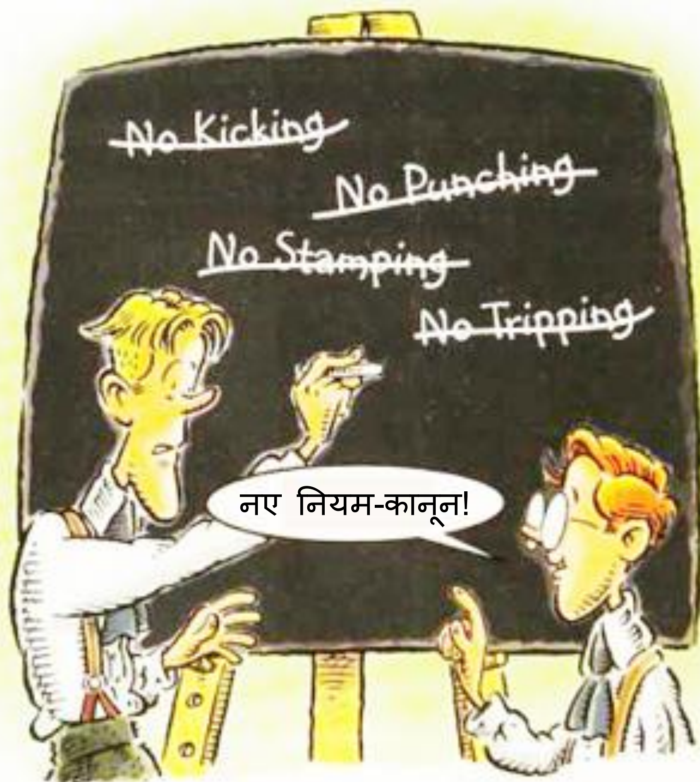
कुछ ने विपक्षी की पिंडली में लात मारने की अनुमति दी.



और कुछ नियमों ने खिलाड़ियों को गेंद उठाकर उसके साथ दौड़ने की भी अनुमति दी.



उन्होंने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए - खिलाड़ियों को, गेंद हाथ में पकड़ने या एक-दूसरे को टंगड़ी मारने की अनुमति नहीं थी.





जब तक वे स्कूल अलग-अलग नियमों का इस्तेमाल करते थे, तब तक कोई भी दो स्कूल एक-दूसरे के साथ खेल नहीं सकते थे. इसलिए, 1863 में, इंग्लैंड के कई स्कूलों और विश्वविद्यालयों के छात्रों ने खेल के नियम तय करने के लिए एक बैठक बुलाई.

समूह ने खुद को फुटबॉल एसोसिएशन (FA) नाम दिया और फिर उनका नया खेल "सॉकर" के रूप में जाना जाने लगा. जल्द ही, वो पूरे इंग्लैंड के पार्कों और पिचों पर खेला जाने लगा.

अंत में, "सॉकर" के नियम बने. लेकिन वो देखने में एक बहुत ही अजीब खेल था. खिलाड़ी मोटे मोजे, भारी सूती कमीज और यहां तक कि टोपी भी पहनते थे.



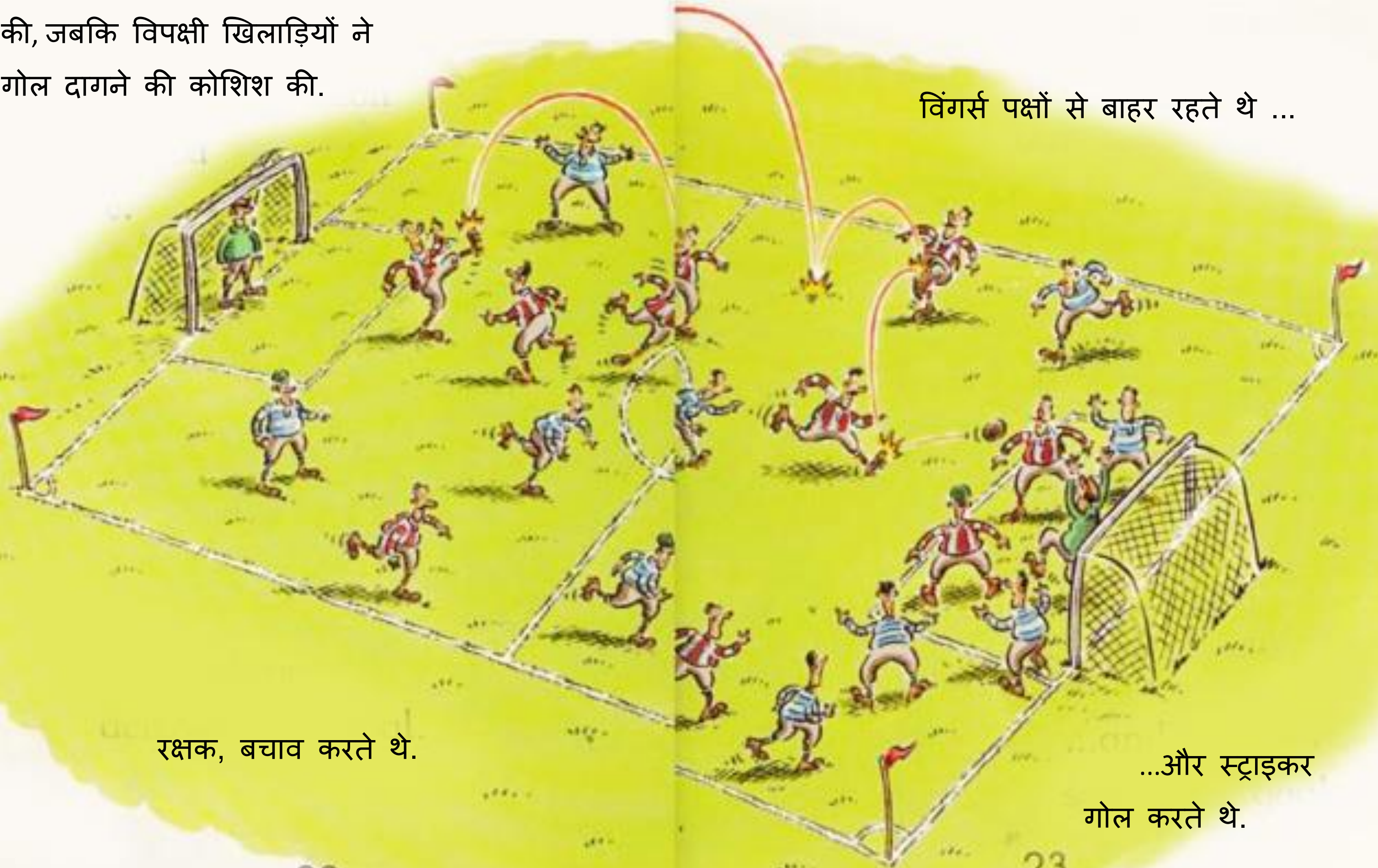
अतिरिक्त पकड़ के लिए, खिलाड़ी अपने जूतों के तल्ले में नुकीले स्टड पेंच लगाते थे - और जल्द ही वे अपने मोज़े के बाहर लकड़ी के मोटे शिन-पैड पहनने लगे.

शुरुआती फ़ुटबॉल पिच भी असामान्य थे. कुछ के बीच में तालाब थे, जिन्हें प्रत्येक खेल से पहले ढक दिया जाता था. न्यू-कैसल की एक टीम की पिच सबसे अजीब थी - यह एक छोर से दूसरे छोर तक ढलान था.

टीमों के रूप में, अब 11 पुरुषों ने खेल को खेला. अब उन्होंने खुद को निर्धारित स्थिति में व्यवस्थित करना शुरू कर दिया.

गोलकीपरों ने गोल की रक्षा की, जबकि विपक्षी खिलाड़ियों ने गोल दागने की कोशिश की.

मिड-फील्डर आमतौर पर बीच में खेलते थे,



विंगर्स पक्षों से बाहर रहते थे ...

रक्षक, बचाव करते थे.

...और स्ट्राइकर गोल करते थे.

शुरू मे खेले गए मैच सभी दोस्ताना खेल थे. फिर, 1871 में, फुटबॉल एसोसिएशन ने F.A. कप नाम से एक नॉक-आउट टूर्नामेंट आयोजित किया. पहली प्रतियोगिता में पंद्रह टीमें खेलीं, जिसे लंदन की “वांडरर्स” ने जीती.





“वांडरर्स” फाइनल में पहुंचने के लिए भाग्यशाली थे. उनके सेमीफाइनल प्रतिद्वंद्वी केवल इसलिए बाहर हुए क्योंकि वे मैच के लिए ट्रेन का किराया नहीं दे पाए थे.

फ़ुटबॉल में सबसे बड़े बदलावों में से एक 1880 में हुआ. F.A. ने खेल में रेफरी की पेशकश की ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मैच के दौरान कोई बेईमानी न हुई हो. रेफरी, खिलाड़ियों से अलग दिखना चाहिए था, इसलिए उसने फैंसी डिनर सूट पहना.



शुरुए में कोई बेईमानी दिखाई देने पर वो केवल एक रुमाल लहराता था.

1970 के बाद ही रेफरी को दुर्व्यवहार करने वाले खिलाड़ियों को दंडित करने के लिए विशेष कार्ड दिए गए. येलो कार्ड एक चेतावनी थी...





... और लाल कार्ड का मतलब था कि खिलाड़ी को पिच से बाहर भेज दिया गया था.

अध्याय 4

वैश्विक हो रहा है



19वीं शताब्दी में जैसे-जैसे अधिक से अधिक लोगों ने विदेशी यात्रा करना शुरू की, वे दुनिया भर में सॉकर गेंदों को अपने साथ लेकर गए.

जल्द ही वो खेल ऑस्ट्रेलिया से लेकर दक्षिण अमेरिका तक - हर जगह खेला जा रहा था.



1904 में, एक नया समूह - फुटबॉल संघों का अंतर्राष्ट्रीय संघ, या F.I.F.A. संक्षेप में - यह सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया कि प्रत्येक देश समान नियमों के साथ खेलें.

जैसे ही फ़ुटबॉल दुनिया भर में फैली, विभिन्न खिलाड़ियों ने अपने स्वयं के विशेष कौशल जोड़े...



... और साथ मे खेल के लिए आश्चर्य भी.

1930 में, विभिन्न देशों के बीच एक नई प्रतियोगिता रची गई - विश्व कप. तेरह देशों ने पहले टूर्नामेंट में भाग लिया, जो दक्षिण अमेरिका में आयोजित किया गया.

लेकिन शुरुआत अच्छी नहीं रही. मेक्सिको और फ्रांस के बीच शुरुआती गेम में, रेफरी ने छह मिनट पहले अंतिम सीटी बजाई. जब तक उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, तब तक खिलाड़ी नहा रहे थे.



रेफरी ने उन्हें अपनी मैले कपड़े वापस पहनकर खेल खत्म करने को कहा.

फिर भी, पहला विश्व कप एक बड़ी सफलता थी. 30 जुलाई 1930 को उरुग्वे और अर्जेंटीना के बीच फाइनल देखने के लिए 100,000 से अधिक प्रशंसक स्टेडियम में उमड़े. उरुग्वे ने वो खेल 4-2 से जीता.



फिर वो प्रतियोगिता दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजनों में से एक बन गई. 1934 में, 32 टीमें खेलीं. 2010 तक, 205 देशों ने भाग लिया, लेकिन केवल शीर्ष 32 टीमों ने दक्षिण अफ्रीका में फाइनल के लिए क्वालीफाई किया.

हर साल सॉकर का खेल बड़ा ओर बड़ा होता जाता है. आज पूरी दुनिया में करीब पंद्रह लाख टीमें हैं. कुछ बड़े मैदानों में खेलती हैं, जहां पर एक लाख से अधिक दर्शक बैठ सकते हैं.



टीमें, लीगस में बँटी होती हैं और हर साल वे एक दूसरे के साथ खेलकर यह सुनिश्चित करती हैं कि कौन सी टीम सबसे अच्छी है. अच्छे खिलाड़ियों को खेलने के लिए करोड़ों रुपए मिलते हैं.

सभी टीम बहुत अमीर नहीं होती हैं. ब्रिटेन के तट के करीब आइल ऑफ सकीली में केवल दो टीम हैं जो एक-दूसरे के खिलाफ हर हफ्ते खेल खेलती हैं.



अध्याय 5

रग्बी नियम

उसके साथी भ्रमित थे, लेकिन भीड़ उसे देखकर पागल हो गई.



लोकप्रियता के बावजूद, हर कोई फुटबॉल नहीं खेलना चाहता था. एक कहानी के अनुसार, 1823 में एक मैच के दौरान, विलियम वेब एलिस नाम के एक छात्र ने फैसला किया कि वह गेंद को लात मारने की बजाए हाथ मे ले जाना ज्यादा पसंद करेगा.

जल्द ही, अन्य स्कूल भी यह नया खेल, खेल रहे थे. उन्होंने इसका नाम विलियम वेब एलिस के स्कूल के नाम पर “रग्बी” फुटबॉल रखा, और अंडाकार आकार की गेंदों का इस्तेमाल किया जिन्हें संभालना और फेंकना आसान था.

रग्बी का मुख्य नियम यह था कि खिलाड़ी गेंद को आगे नहीं फेंक सकते थे. लेकिन यह शुरुआती फ़ुटबॉल की तरह ही अराजक था, जिसमें सैकड़ों खिलाड़ी गेंद के लिए लड़ते थे. सभी को ढेर बनाकर एक-दूसरे से भिड़ना पसंद था, जिसे वे "स्क्रमेजेज" कहते थे.



और खेल का एक हिस्सा ऐसा भी था जिसे वे और भी ज्यादा प्यार करते थे...

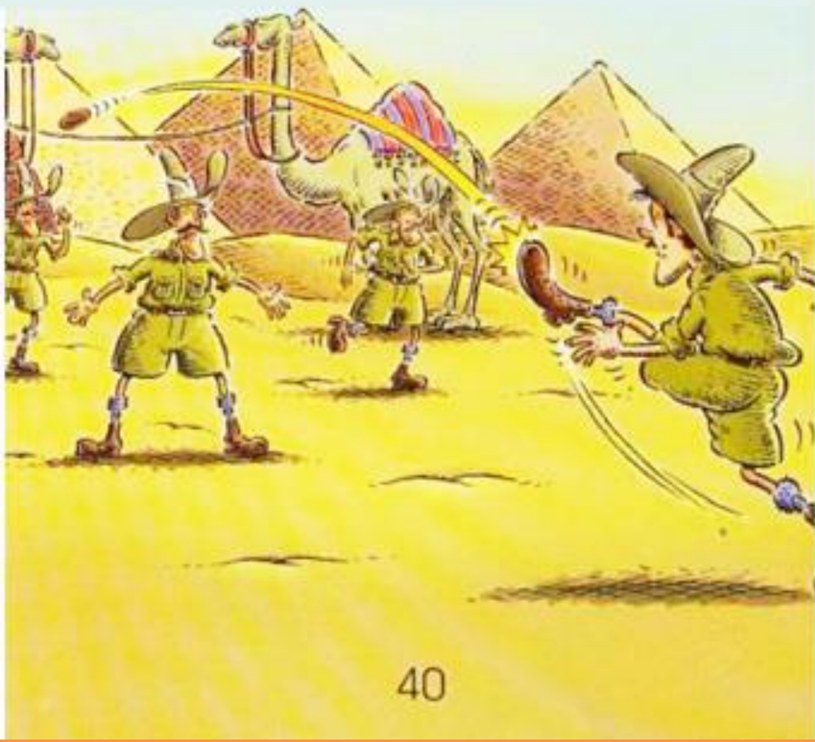
... रग्बी टैकल.



1895 में, रग्बी का एक नया रूप बनाया गया जिसे रग्बी लीग कहा जाता है. इसमें कम खिलाड़ी और ढेर थे, लेकिन वो भी उतना ही लोकप्रिय हुआ.

रग्बी को दुनिया भर में प्रशंसक मिले, पहले यूरोप में, फिर ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका में.

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, मिस्र के पिरामिडों की बगल में भी एक मैच खेला गया था.





आयरलैंड में, रग्बी के नियमों को सॉकर के साथ मिलाकर एक ऐसा खेल बनाया गया जो दोनों के समान था, जिसे गेलिक (गे-लाइक) फुटबॉल के रूप में जाना जाता है.

रग्बी जैसा ही एक खेल ऑस्ट्रेलिया में भी खेला जाता है, जिसे ऑस्ट्रेलियन रूल्स फ़ुटबॉल के नाम से जाना जाता है.

खिलाड़ी ऊंचे डंडों के बीच गेंद को बूट मार के गोल करते हैं.

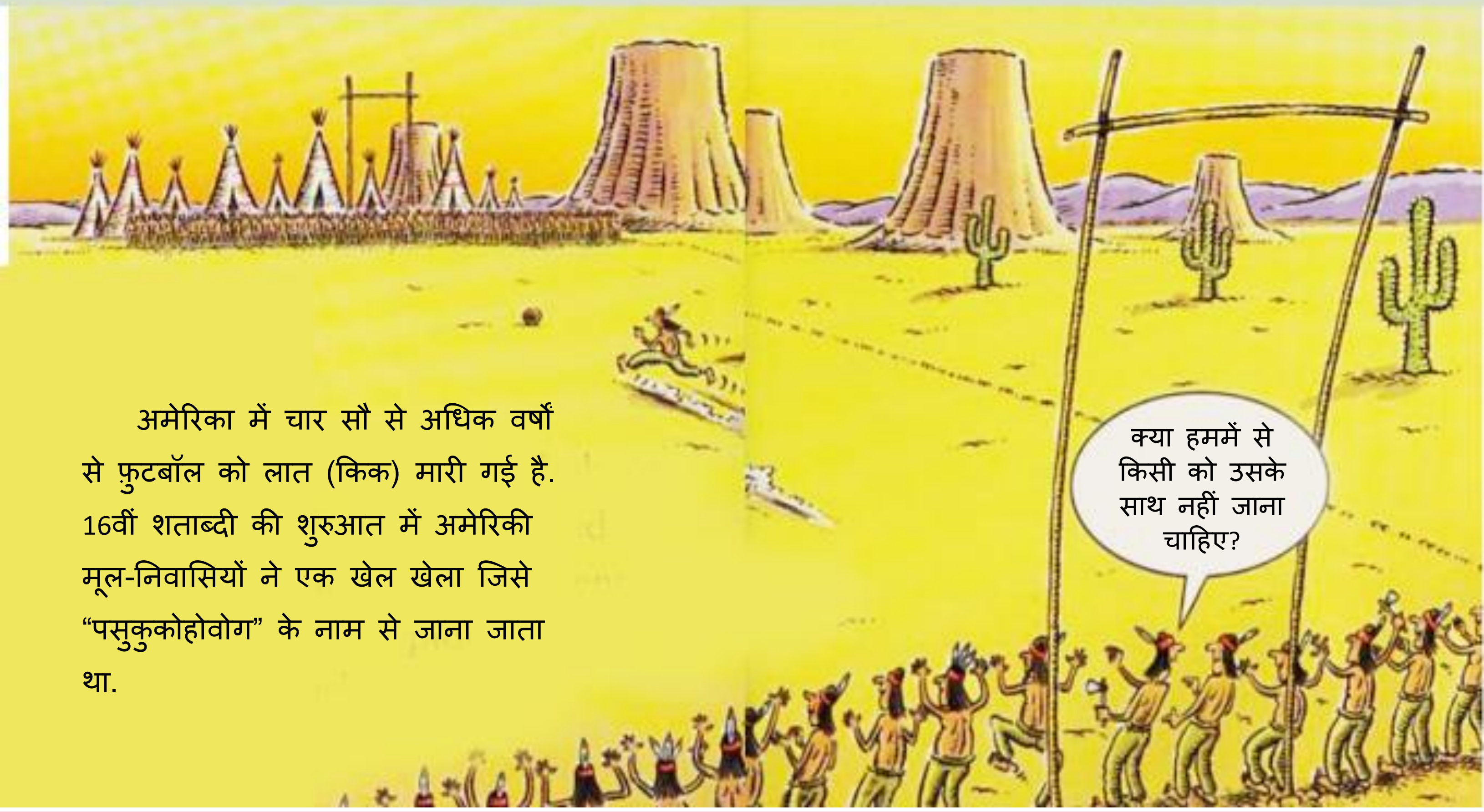


लेकिन जब रग्बी अमेरिका पहुंचा, तो वो कुछ अलग ही बदल गया...

अध्याय 6

अमेरिकी फुटबॉल

1000 लोगों तक की टीमों ने 800 मीटर (आधा मील) की दूरी पर स्थित गोल-पोस्ट के बीच एक गेंद को किक मारने की कोशिश की. यह काफी कठिन काम था. खिलाड़ियों ने अपने विरोधियों को मारने के लिए भेष धारण किया.



अमेरिका में चार सौ से अधिक वर्षों से फ़ुटबॉल को लात (किक) मारी गई है. 16वीं शताब्दी की शुरुआत में अमेरिकी मूल-निवासियों ने एक खेल खेला जिसे “पसुकुकोहोवोग” के नाम से जाना जाता था.

फिर, 19वीं सदी के अंत में, रग्बी अमेरिका में आई. उसके बाद विभिन्न कॉलेजों और स्कूलों के बीच खेलों का आयोजन हुआ.



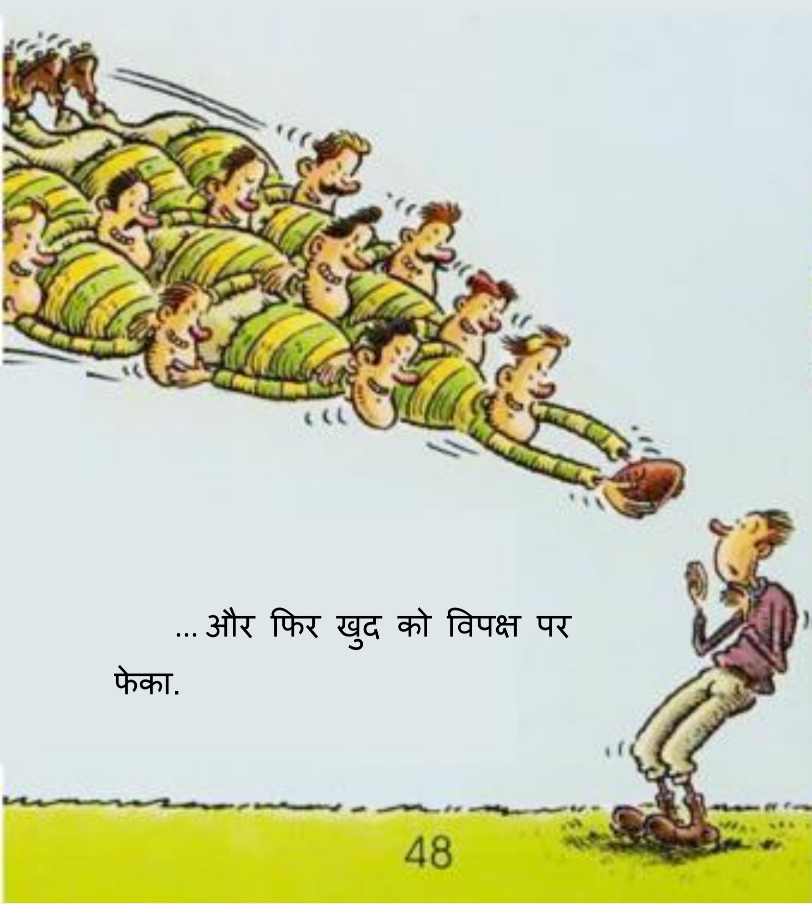
एक कॉलेज में, वाल्टर कैंप नाम के एक व्यक्ति ने महसूस किया कि खेल को और भी बेहतर बनाया जा सकता था.

इसलिए उसने पिच के आकार को बदल दिया, प्रत्येक टीम में खिलाड़ियों की संख्या कम की, और खिलाड़ियों को गेंद लेकर आगे बढ़ने की अनुमति दी.



इस तरह अमेरिकी फुटबॉल का जन्म हुआ.

फ़ुटबॉल और रग्बी की तरह, अमेरिकी फ़ुटबॉल मूल रूप से एक हिंसक, क्रूर खेल था. खिलाड़ियों ने "फ्लाइंग वेज" जैसी रणनीति का इस्तेमाल किया, जिसमें उन्होंने एक-दूसरे के हाथों को पकड़कर जोड़ा...



... और फिर खुद को विपक्ष पर फेका.

कभी-कभी गेंद वाला खिलाड़ी सुरक्षा के लिए जमीन पर रेंगता था, या उसके साथी उसे खींचकर गोल लाइन तक ले जाते थे.



अमेरिकी फ़ुटबॉल खिलाड़ियों ने हड्डियों को कुचलने वाले "टैकल" से खुद को बचाने के लिए अपनी शर्ट में पैडिंग छिपाना शुरू कर दी.

लेकिन उसने मदद नहीं की. खेल इतना कठिन था कि, कुछ खेलों में, खिलाड़ियों की मृत्यु भी हो जाती थी. आखिरकार, यह निर्णय लिया गया कि अमेरिकी फुटबॉल खिलाड़ियों को सुरक्षात्मक कवचों की जरूरत होगी.

सुरक्षा के लिए


हेलमेट


मुंह रक्षक


कंधे के पैड

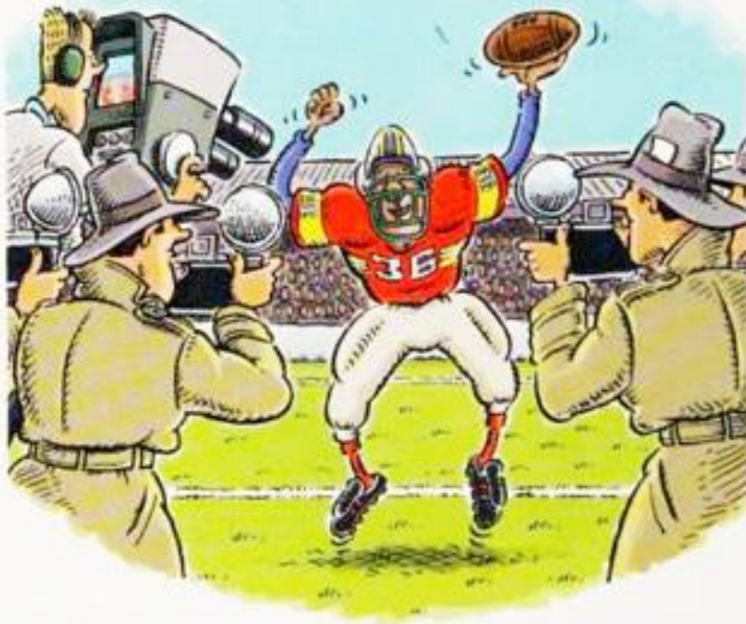

हिप पैड


घुटने के पैड


पिंडली के पैड



पैरों की अंगुली टोपी



1950 के दशक तक, टेलीविजन ने पूरे देश में अमेरिकी फुटबॉल खेलों का प्रसारण किया. अधिक से अधिक लोगों ने अपनी स्थानीय टीमों का समर्थन करना शुरू किया और फिर खिलाड़ी बड़े सितारे बन गए.

आज, दुनिया भर में 15 करोड़ से अधिक लोग उस साल के सबसे बड़े खेल को देखते हैं, जिसे "सुपरबाउल" के नाम से जाना जाता है.



अध्याय 7

अजीब मैच



प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भी - अजीब जगहों और समय में फुटबॉल मैच खेले गए थे.

1914 में क्रिसमस वाले दिन, ब्रिटिश और जर्मन सैनिकों ने एक-दूसरे के खिलाफ फ़ुटबॉल खेला. जब खेल समाप्त हो गया उसके बाद वे अपनी खाइयों में लौट गए और उन्होंने युद्ध जारी रहा.

लगभग तीस साल बाद, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, "डायनमो कीव" नामक यूक्रेन की एक टीम को दुश्मन जर्मन पक्ष के खिलाफ एक खेल खेलने के लिए मजबूर किया गया. जर्मनों ने टीम को कड़ी चेतावनी दी थी...



लेकिन खिलाड़ियों ने उस चेतावनी से खुद को परेशान होने नहीं दिया - वे अपने राष्ट्रीय गौरव के लिए खेल रहे थे. इसलिए, उन्होंने अपने जूते पहने, पिच पर भागे और 5-1 से गेम जीत लिया.



मैच के बाद, कई खिलाड़ियों को जर्मन सेना के अधिकारियों ने गिरफ्तार किया और फिर उन्हें मार डाला.

सबसे अजीब फ़ुटबॉल खेलों में से एक 1945 में हुआ, जब "आर्सेनल" ने लंदन में "डायनमो मॉस्को" के खिलाफ खेल खेला. जैसे ही खेल शुरू हुआ, कोहरा इतना गहरा था कि खिलाड़ी गेंद तक को नहीं देख पा रहे थे.

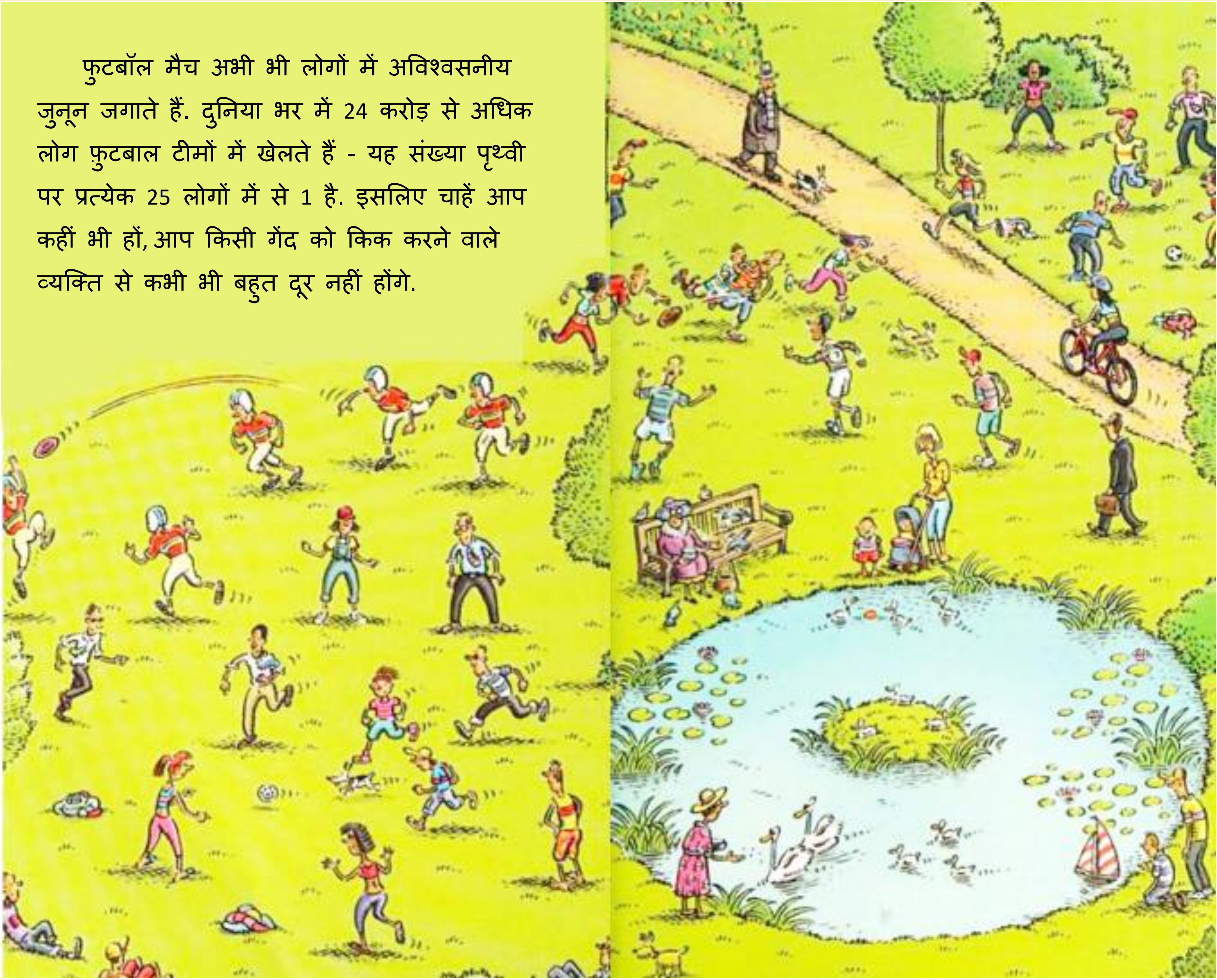


दोनों टीमों ने अपने-अपने फायदे के लिए खराब मौसम का इस्तेमाल किया. एक "आर्सेनल" खिलाड़ी को मैदान से बाहर भेजा गया, लेकिन वो फिर से वापस आ गया. इस बीच रूसी पक्ष ने अपने चार अतिरिक्त खिलाड़ियों को मैदान में उतार दिया.

जैसे-जैसे कोहरा घना होता गया, चीजें और भी अराजक होती गईं. "आर्सेनल" गोलकीपर गोल पोस्ट की ओर भागा और उससे बुरी तरह टकरा गया - और तब भीड़ के एक सदस्य ने उसकी जगह ले ली.



फुटबॉल मैच अभी भी लोगों में अविश्वसनीय जुनून जगाते हैं. दुनिया भर में 24 करोड़ से अधिक लोग फ़ुटबाल टीमों में खेलते हैं - यह संख्या पृथ्वी पर प्रत्येक 25 लोगों में से 1 है. इसलिए चाहें आप कहीं भी हों, आप किसी गेंद को किक करने वाले व्यक्ति से कभी भी बहुत दूर नहीं होंगे.



फुटबॉल तथ्य और तिथियां

200 ई.पू. प्राचीन चीनी सैनिक अपने लक्ष्य को बेहतर बनाने के लिए फ़ुटबॉल को किक मारते थे.

100 ई.पू. रोमन सेना ने भी गेंदों को किक करना शुरू किया.

13वीं सदी - लोगों ने इंग्लैंड की गलियों में जमकर फुटबॉल खेलना शुरू किया.

19वीं सदी की शुरुआत में फुटबॉल को अंग्रेजी स्कूलों में "प्रशंसक" यानि फैंस मिले.

19वीं सदी में सुअर के मूत्राशय से फुटबॉल बनाई जाती थी, जिन्हें गुब्बारों की तरह उड़ाया जाता था. अक्सर उनमें इतनी बदबू आती थी कि कोई उनके पास नहीं जाना चाहता था.

1823 - खिलाडियों ने गेंद को उठाया... और फिर रग्बी का जन्म हुआ.

1863 - फुटबॉल एसोसिएशन का गठन हुआ.

"सॉकर" नाम फुटबॉल एसोसिएशन से आता है.

ऑस्ट्रेलियाई नियम (1858), अमेरिकी फुटबॉल (1874), और आयरलैंड में गेलिक फुटबॉल (1887) सहित पूरी दुनिया में नए प्रकार के फुटबॉल नियम विकसित हुए.









1891 में सॉकर पिचों पर गोल जाल की शुरुआत की गई. तब खिलाड़ी बता सकते थे कि उन्होंने स्कोर किया या नहीं.

1930 - दक्षिण अमेरिका में पहला फुटबॉल विश्व कप शुरू हुआ. प्रतियोगिता शुरू करने वाले व्यक्ति के नाम पर कप को जूल्स रिमेट ट्रॉफी के रूप में जाना जाता है.

फ़ुटबॉल खिलाड़ियों ने 1933 में अपनी शर्ट्स पर नंबर पहनना शुरू किए ताकि रेफरी को पता चल चले कि वे जीत रहे हैं.

विश्व कप मार्च 1966 में चोरी हो गया था. एक हफ्ते बाद, उसे पिकेलस नामक कुत्ते ने एक झाड़ी में खोजा.

1967 अमेरिका में शीर्ष टीम को तय करने के लिए पहला अमेरिकी फुटबॉल “सुपरबाउल” खेला गया.

शायद 1975 में चिली और उरुग्वे के बीच सबसे खराब फ़ुटबॉल खेल हुआ. खेल शुरू करने वाले 22 खिलाड़ियों में से मैं तीन को छोड़कर सभी को मैदान के बाहर भेज दिया गया.

1987 पहला रग्बी विश्व कप ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के बीच खेला गया.

2010 - 205 देशों ने 19वें फुटबॉल विश्व कप में प्रवेश किया. दक्षिण अफ्रीका में. फाइनल को दुनिया भर में एक अरब से अधिक प्रशंसकों द्वारा देखा जाता है.